कवि हरिराजकुट्र प्राकृत मलयसुंदरीचरियां
Prakrit Malayasundaricaririyan of Kavi Hariraj

डा० प्रेम सुमन जैन

मध्ययुगीन प्राकृत कथासाहित्य में से जो रचनाएँ अब तक अप्रकाशित एवं अप्रसिद्ध हैं उनमें मलयसुंदरीचरियां भी है। इस प्राकृत कथाप्रथाय की तीन पाण्डुलिपियों का परिचय हमारे पहले प्रस्तुत किया था। ५ इसका सम्पादन-कार्य करते समय भव्यकारकों और वर्तमान तिथियों के इस्तेमाल और परिचय बढ़ता प्रस्तुत किया जा रहा है। इस पाण्डुलिपि का उल्लेख डॉ० एच० डी० बेल्नकर ने किया है ६ एवं एच० आर एर एर मिडले ने भी इसका अपनी ग्रन्थसूची में स्थान दिया है। ७ इनमें अन्य ग्रन्थसूचीयों एवं उनकी प्रकाशित प्रथा सूचियों में कवि हरिराजकुट्र इस मलयसुंदरी-चरियां की दस्तारी प्रस्तुत होने की कोई सूचना प्राप्त नहीं है।

अवधारण्य मलयसुंदरीचरियां से सम्बन्धित संस्कृत, हिंदी, गुजराती एवं जर्मन भाषा के जो अनुवादियों द्वारा संस्करण प्रकाशित हुए हैं। उनकी चर्चा हमारे अपने पूर्व लेख में कर दी है। गतर्थ भी इस कथा से सम्बन्ध दो हिंदी कृतियां रामनाथ कुमारी आदि हैं। ८ इन सभी कृतियों में इस मूल प्राकृत रचना को अज्ञातकृतक ही माना गया है। एकमात्र पूरा की इस प्रति में ही रचनाकार के रूप में कवि हरिराज की प्रशस्ति प्राप्त होती है। अत: इस विषय में अनु-संधान आवश्यक प्रतित होता है। कवि एवं इस पाण्डुलिपि के समन्वय में अन्य विवरण देने के पूर्व इस प्रति का आदि एवं अंतिम अंश यहाँ उल्लिखत है—

मलयसुंदरीचरियां (प्राकृत)
[ हरिराज, स० १६२८ ]
पुनाप्रस्तुत (१४०४)

1. जैन, प्रेम सुमन, ‘मलयसुंदरीचरियां की प्राकृत पाण्डुलिपियाँ’ नामक लेख, कैसली इन्स्टीट्यूट रिसर्च बुलेटिन नं० ४ (१९८४) में प्रकाशित, पृ० ४९५५
2. बेल्नकर, एच० डी०, जिनरलकार्ड (१९४४), पृ० ४१२ एवं ३०५
3. काबडिया, एच० आर०; डिस्क्रिप्टिव कैंटेलेज ऑफ मेनस्क्रिप्ट्स, भाग १६, संख्या I, पार्ट II (१७४४), संख्या—१४०४
4. (i) रामाराम, मोहनलाल सी०; ‘महाबल मलयसुंदरी’, अनु—मुनि दुल्हराज, चु०, १६२५ (ii) जैन रोहनसाल, मलयसुंदरी, जयगुर (१६८७)
प्रारम्भिक अंश :

|| श्री वीररामाय नमः ||

पण्य-पयकमल सुर्यण-किनर-नरविद नह खयर......
...
...
पडिय, शमो शमो तुज्ञ जिनासा || १ ||
धवलं वरसहयरे वीणाकर जामु पुतिया हुलेे
गायती महुर... सरसइ महुर || २ ||
वीरसस पढ़मणहु पयडो दायार-लिङ्द सिद्दीए
सो गोयमु समरंतो अप्पउ कल्याण सुकुमबे || ३ ||
वृहिपणण-पयकमलं पणमउ हरसेण पुव्वसुरीण
मुढह हय सबं पसाउ जिनभक्ति कयसति || ४ ||
पाईं वंधे कबवे पुववकय सोइऊण अमीइं सगं
तो मह परिसवाण धरण तिति कबव-आयरे || ५ ||
धम्म अपकक्ति-हरण धम्मं उवकटु-संगलं भणियं
संसार-सारधम्मं, धम्मं धुह-सिववहे सतं || ६ ||
चउविधम्ममारणु जिणेवेहि चउम्महे पयडो
दाणवहोरे तह सीलं तव भावेण नामसं अमलं || ७ ||
नाणं दंसर-चरणं रणणतं जीववहों हवह
तह कहिंय पि हु समं नाणपहाण विनकलहि || ८ ||
लोयणं तद्यं नाणण नाणं दीवंत मोह-रसमलं
नाणं तिहुणसुरुं नाणं अपराणं मल-दहं || ९ ||
नाऊ धरां समं जीवं पडियं महापया महं
जह सई य मलयसुरदि वोहए गोसिलो गवे || १० ||
अतिय इहं भरवहसं पसिह चंदवाण पुरी नामे
कणण-मणी-मंदिरेहि पायारणं तुह-सिहरेहि || ११ ||
दयासिहिंज़ जहि लोए महाजणो वसइ जत्य वरसिल
इंदपुरी सारिनम श्रिवनबरविंह अच्छरिं || १२ ||
सिरिवीरधवल नामे अतिय निवो तत्य केसरी सरिसो
मायंग अरिजारदरण जेण गुभतलं दलिं || १३ ||

अंतिम अंश :

जह सीलु धवलु पाविउ मलया सई रतिसंकद्वं पडियो
तिम हो भव्वणं तुसं रखबंतह सुहं फलं होइ || ७९३ ||
तह तवि महाव्वलेण सहिहों उवसंग-पावियो मुक्तो
तिम जे निचलु ठाण झहउि ते भविय संसिद्ध || ७९४ ||
पाण्डुलिपि-परिचय :—

पुराण भण्डर की इस प्रति में कुल २८ पृष्ठ हैं। प्रत्येक पृष्ठ पर लगभग ४५ पंक्तियां हैं एवं प्रत्येक पंक्ति में लगभग ४० शब्द हैं। प्रति की स्थिति अच्छी है। किन्तु भाषा की दृष्टि से प्रति काफी असुगढ़ है। संयुक्त अक्षरों को प्रायः सरल अक्षरों में ही लिखा गया है। यथा—अर्थ = अथि, तथा = तथ, जत्था = जथ, हृतो = हृतो, पिंछढ = पिंछढ इत्यादि।

इस पाण्डुलिपि में ग्रन्थ की चार भागों में विभक्त किया गया है। मलयसुन्दरी के जन्म-वर्णन तक की कथा १३० गाथाओं तक वर्णित है। इसे प्रथम स्तवक कहा गया है। इसके बाद उसका यौवन-वर्णन किया गया है। आगे ३८२ गाथाओं तक मलयसुन्दरी के पाणिग्रहण का वर्णन है। इसे द्वितीय स्तवक कहा गया है। इसके आगे की गाथाओं में ५२७ गाथा तक महाबल एवं मलयसुन्दरी के अपने नगर एवं गृह में प्रवेश करने का वर्णन है। इसे तृतीय स्तवक कहा गया है। अन्तिम चतुर्थ स्तवक को चतुर्थ पद्ल कहा गया है, जो ७९७ गाथा पर समाप्त हुआ है। इसमें मलया के विवाह की प्रारंभिक तक की कथा संक्षिप्त है। इसके बाद पुर्व प्रथम में लगभग १२०० प्राकृत गाथाएँ हैं जबकि इसमें कुल ७९७ गाथाएँ हैं।

प्रस्तुत पाण्डुलिपि की अंतिम प्रकाशित में इसका रचना या प्रकाशन सयं १९२८ वैदिक ८ सोमवार दिया गया है। इससे मान्यता के लिए भाषा महत्व की हो गयी है। यह अलग बात है कि सयं १६२८ के रचनकाल माना जाय या लेखनकाल? इसका समाधान ग्रन्थकार के परिचय पर विचार करने से हो सकेगा।

१. मुशाबककीहेरमौजाम कविरिजेजामिरिते भारतपुपापायाने मलयसुन्दरीचरिते मलयसुन्दरी-जस्मवर्णनी नाम प्रथम: स्तवक:।

२. लघूम मलयसुन्दरीय जागरण सा सिंब।
हेमपपहिरया कियं पदलए सुवसं चउहिकरा। ७९७॥
कवी हृदिकृत प्राकृत मल्लसुंदरीचरियां

कविता परिचय—

इस पाठकायिक में, जो चार स्तवक या पदल है, उनमें जो पुष्पकाये दी गयी हैं वे बहुत महत्वपूर्ण हैं। चारों में कवि ने अपने सम्बन्ध में कुछ नई बातें बतायी हैं। इस सामग्री के आधार पर प्राकृत मल्लसुंदरी के रचनाकार के सम्बन्ध में निम्न विवरण उपलब्ध होता है।

कवि नाम—प्रत्यक्षकार ने स्वयं को हृदिराज, कवि हृदिराज, हृदि कविआदि नाम से अभिलक्षित किया है। प्रथम, द्वितीय एवं तृतीय पदल की पुष्पिका लगभग समान है। यथा—

सुन्दरवनस्य हृदिराजस्य कविः हृदिराजविररिते जानलोपाल्याने मल्लसुंदरीचरितं पाणिप्रभुवं वगनानो नाम होती स्तवकं समाप्तं।

इससे स्पष्ट है कि इस प्रथम का कर्ता कवि हृदिराज हैं। उसने प्रथम पुष्पिका में स्वयं को हृदिराज एवं तृतीय पदल में हृदि कवि भी कहा है। अंतिम प्रशासित में हृदिराज उल्लेख है। अतः में हृदिराज नाम भी कवि के लिए या उसके गुरु के लिए प्रयुक्त लगता है—

हृदिप्रभुविरितं पदलमुखां च चूजिकराः। गाथा १६७। इसका अर्थ ‘हृदि प्रभुविरितं पदलमुखां च चूजिकराः’ (अथवा के लिए) इस चतुर्थ पदल में ‘सुन्दरवनस्य हृदिराजस्य कविः हृदिराजविररिते जानलोपाल्याने मल्लसुंदरीचरितं पाणिप्रभुवं वगनानो नाम होती स्तवकं समाप्तं’ यथा किया जाय तो व्यक्तरण की दृष्टि से ‘हृदिप्रभुविरितं पदलमुखां च चूजिकराः’ गुरुत्व रखता नहीं खरी तृतीय स्तवक होता है। अन्य प्रति के मिलने पर इसका निर्णय हो सकेगा।

मध्ययुगीन जैन साहित्य में हृदिराज या हृदि कवि नाम सुलभ नहीं रहा है। फिर भी जन प्रथम ग्रन्थकारों की ग्रन्थवृत्तियों में हृदिकृत का कुछ विवरण प्राप्त है। १५ वीं शताब्दी में उत्सर्ग वचनएसन के शिक्षा हृदि मुनि ने ‘कृपुरप्रकार’ नामक सुभाषित प्रथम संस्कृत में प्रणीत किया है। इस हृदिमुनि की अन्य रचना नेमनचरित भी है। इनके कृपुरप्रकार की एक प्रति विशं १६५० धर्मवर्धन है। इस हृदिमुनि को ‘हृदिकृत’ भी कहा गया है। अतः यह स्तोत्र स्तोत्र किया जानी तक है कि कृपुरप्रकार के हृदिकृत ही इस मल्लसुंदरीचरियां (प्राकृत) के हृदिकृत या हृदिराज हैं। प्राकृत की यह रचना भी विशं १६२८ में लिखी गयी है। अतः सम्बन्ध है १६ वीं शताब्दी के आस-पास हृदिकृत या हृदिराज का समय रहा हो।

1. जै मध्ये हृदिराज गाहवसे संभेद विलयायितो। गाथा १३१
2. आनन्दों कमलासिणि हृदि कवि कीया कहा सुंदरी। हृदिमुनि पुष्पविरित हरे से संभेद विलयायिता। गाथा ५२९
3. सुन्दरकह अजुहरी रघु हृदिराज मल्लसुंदरीचरियां। गाथा ७२६
4. देवाई, एम.दीर्घो; जैनसाहित्याने इति, पृ.३३६ दियमण ३६६
5. मुनि पुष्पविरितयाहिता। कैलागा आफळ संस्कृत एवं प्राकृत मैनुस्क्रिप्स, पार्ट IV (१९६८), पृ.१५६
6. मुनि पुष्पविरितयाय; जैनसाहित्य तत्वतास, अहमदाबाद (१९७२), पृ.२०२, २५६ एवं २६०
कविवंता परिवार—

मल्युन्द्रीचरियं की प्रथम पुष्पिका में कहा गया है कि ‘श्रीमाल’ के विशाल निर्माण कुल में श्री हृंसराज के पुत्र (अंगत कवि) हृंसराज ने सरस गाथाओं में विस्तार को संशोधन में प्रस्तुत किया है—

श्री भाष्य विशालवंशविचार श्री हृंसराजांगजो।
जे अर्थं हृंसराज गाह-सरसे संस्कृतं विचारं जो।

इससे जाना होता है कि कवि हृंसराज श्रीमाल वंशीय हृंसराज के पुत्र थे। श्रीमाल कुल जैनपरम्परा में प्रसिद्ध कुल है। एक उल्लेख के अनुसार सं १५५० में हृंसराज नामक एक श्रावक हुए थे, जिनके भाई एकादे ने पदावस्थक अवसूरि की प्रति तैयार की थी। अतः १५-१६ वीं शताब्दी में हृंसराज नाम प्रचलित था।

कवि हृंसराज ने कहा है कि जान-दर्शन-चारित्र के गुणों के निधि और शील के लिए विश्वास मल्यात का जो चरित्र है वह प्रथम जन्म लेने वाले (बड़े भाई) हेम के लिए सुदृढ़-कारी हो। आगे भी कवि ने सुराधक श्री हेमराज के लिए इस रचना को लिखनें का तीन बार उल्लेख किया है—

सुश्रावक श्री हेमराजार्थ कवि हृंसराज विचित्रिते।

इससे स्पष्ट है कि हेमराज कवि के बड़े भाई ही नहीं अपितु इस रचना के निर्माण में प्रेमाधारक भी थे। इस तरह एक ही परिवार में हृंसराज (मित्र), हेमराज (भावा) एवं हृंसराज (कवि) का होना स्वाभाविक लगता है। तीनों की नामराशि एक है और ‘राज’ शब्द प्रत्येक नाम के अंत में जुड़ा हुआ है।

यह हेमराज नाम भी १५-१६ वीं शताब्दी में प्रचलित था। बुढ़नगर (बड़नगर) में देवराज, हेमराज एवं पाटसिंह तीनों भाई श्रीमुंत एवं सुश्रावक थे। देवराज ने सोमसुन्द्रसुरि को सूषिपद प्रदान किया था। इस हेमराज और कवि के भावा सुश्रावक हेमराज में कोई सम्बंध बनता है या नहीं, यह अनेवरणीय है। एक अन्य उल्लेख में पाटपण के श्रीमाल कुल के हेमा का परिचय प्राप्त होता है, जिसका भाई देवो १५५० में पाटपण महमूद के राज्य में राज्याधिकारी था। यह हेमा ‘हेमराज’ से समबन्धित नहीं हो सकता। क्योंकि इसके कुल तो श्रीमाल ही है, लेकिन पिता का नाम हृंसराज न होकर मदनदेवसिंह है।

1. जैनसाहित्योऽ इतिहास, पैराग्राफ ६६७
2. शास्त्र-दर्शन-चारित्रविश्वास, सिक्क्सवस विकवातावो।
3. सो मल्याचरियं उज्ज्वलभ-पहमे हेमसस सुश्रावको। गणो १११
4. जैनसाहित्योऽ इतिहास, पृ० ४५३
5. भारी, पृ० ५०३, विपण संख्या ४७७
कवि हृदिराजकृत प्राकृत मल्यसुंदरीचरित्र

इसके अतिरिक्त अंतिम प्रसासित में एक पंक्ति आयी है—हेमस्वर बेंज सुखं, हेमस्वर हृदिराजकृत् दौर्जित्रचंदवी। गा. ७६९। वीर जिनेद्र हेम एवं हेमस्वर के लिए सुख प्रदान करें। यहाँ प्रथम हेम को हेमराज सुधाकर माना जा सकता है। किन्तु हेमस्वर कौन है, यह विचारणीय है। अगली गाथा में इस हेमस्वर का उल्लेख है। कहीं यह कवि हृदिराज के गुरु का नाम तो नहीं है? अन्य पाठकों की प्राप्ति से ही इस पर कुछ कहा जा सकेगा।

रचना बेवीरकहः—

मल्यसुंदरीचरित्र को कवि ने पूर्वकथा के अनुसार लिखने की शक्ति ही है। किन्तु संकेत नहीं किया कि उन्होंने प्राकृत कथा का आधार किया है या संस्कृत कथा का। चूँकि कवि हृदिराज का समय सं. १६२८ के लगभग है अतः उन्होंने अब तक रचित मल्यसुंदरीचरित्र आदि संस्कृत कथा का संस्कृत कथा का अवश्य अवलोकन किया होगा। इस समय तक गुजराती में भी मल्यसुंदरीचरित्र शीर्षक कथाओं की जा चुकी थी। ३ मल्यसुंदरीकथा के परवर्ती किसी लेखक ने कवि हृदिराज का उल्लेख या संकेत नहीं किया। ३२ इससे लगता है कि प्रस्तुत रचना अधिक प्रसिद्ध नहीं थी। कवि ने इसका अपर नाम ज्ञानरत्नरामायण’ भी दिया है।

जयतिलकसूरि ( सं. १४५६ ) ने भी अपनी रचना का यह अपर नाम दिया है। इस कथा के नायक महायज्ञ वृद्ध मल्यसुंदरी दोनों ही ज्ञान के रत्न थे। सम्भवतः इसी कारण उनके कथात्मक की ‘ज्ञानरत्नरामायण’ नाम कवियों ने दिया है। जयतिलकसूरि एवं कवि हृदिराज दोनों ने प्रारंभ में रत्नवार्त एवं ज्ञान के महत्व को प्रकट किया है।

यथा—तृतीय छोटन ज्ञानमुद्दात्यथप्रकाशनम्।
द्वितीयं च रवेबिम्बं दृष्टिरतरतमोहम्॥
ज्ञान निष्कारणो वेदाच्यं दीर्घवासुवधी।
ज्ञान निर्विरोधं यद्विषां दीपस्तमोभवे॥

—जयतिलकसूरि, म.० सं० १३६७ लोक १६-१८।
लोकण तदयं नानां नानां दीर्घमोह-रसयंह।
नानां तिह्यणासूरं नानां अपपान मल-दहं।

—हृदिराज, म.० सं० १३०६ गाथा १९।

इससे प्रश्न होता है कि कवि हृदिराज ने जयतिलकसूरि कृत मल्यसुंदरीकथा शीर्षक संस्कृत रचना का अवलोकन कर इस प्राकृत कथा की संस्करण में प्रस्तुत किया है। इन दोनों

१. हेमस्वर हृदिराजकृत प्राकृत (किय) पहले सुखं चउहोकारा॥ गा. ७६९।
२. सं० १६२४ में कवि हेमस्वर का ‘मल्यसुंदरीचरित्र’ एवं सं० १६८० में चाल्हचंद्र का ‘महाबल मल्य-सुंदरीराम’ की कई प्रतियां प्रस्तुत थीं।
३. शामि, डॉ. ईश्वरनाथ; ‘कवि जिन्हें ‘कुल मल्यसुंदरी ‘कवि जिन्हें ‘कुल मल्यसुंदरीं चरित्र एक पर्यवेक्षण’ नामक लेख मध्यवर्ती अभिनवगुप्ता ग्रन्थ, गृ. ३५२-३५१।
४. जैसलमेरलेखक—सं० मुनि पुष्पविनय, पृ. २००, रायके पोषां में संख्या १७५ की प्रति
रचनाओं के अन्तःसाक्ष्य से स्वतंत्र अधिक स्पष्ट हो सकेगी कि इस प्राकृत रचना पर पूर्ववर्ती कवियों का कितना प्रभाव है।

कवि हुरिराज के अनुसार उन्होंने सरस्वती का आदेश मानकर इस रचना का प्रणयन किया है और मल्ल्या सती का चरित्र अच्छे छठों (पक्षों) में प्राकृत में कहा गया है। शील के माहात्म्य को प्रकट करने के लिए, सज्जनों और प्रियजनों के संयोगजय आनन्द हेतु सुभावक श्री हेमराज के लिए उनके आग्रह पर अपनी बुद्धि से कवि ने इसकी रचना की यथापूर्वक कवि ने प्राकृत भाषा में कथा लिखने का संकल्प किया है। किन्तु कई स्थानों पर उन्होंने संस्कृत के प्रयोग द्वारा कथन को आगे बढ़ाया है। यथा—

बिशीता भूरिदिवेण्य तेन सा पि महासति।
वस्त्ररजनकारेण क्रीता निःकसुणेन हि। ५५४।३

एवं

रति न लभते कवापि लुटुंती निसि भूतले।
संदिष्टो दुष्टसर्पेण निग्रातेन कुरोगिः सा। ६९३।५
संस्कृत का प्रयोग उस्कियों आदि के लिए भी किया गया है। यथा—

वर्न मुल्लु न शीलस्य भंगो वेनाकसंत्र क्रतम।
देवत्वं लभते वा नरकं च क्षत्रं व्रतं। ४७८।४

तथा—

सतीनां शीलविधवंसः हुतो लोकेत्य निषिद्धतम।
अकीति कुस्ते कामं तीव्रजुङ्कं वदवति च। ५८०।५

ग्रन्थ की भाषा पर गुजराती आदि क्षेत्रीय भाषाओं का भी प्रभाव स्पष्ट लक्षित होता है। कवि ने स्वयं ऐसे पक्षों को ‘दोहा’ कहा है। महासती मल्ल्या के शील पर संकट आने के प्रसंग में कवि उस पर कुड़ूट रखने वाले को लक्ष्य कर कहता है—

परि विय विकृतिये जे पुरिसमुरयसुहुं इचछंति।
ते रावण दुल्लं निव फल पत्तक्षल लहरि। ५८३।१

1. भद्रतो मल्ल्यास्यलिङ्ग चरित्रं सुखदं-पाइक्केँ।
अपाणो बुढ़ीमाण बिय गढ़ते योहावमेवायण ।।
श्री हेमराज-कारणी हुरिकवि सीलवस माहपद,
चाह करणमूंगमें प्रभावकामें च आनमन्दे। ३८५॥
2. मल्ल्यसुदरीचरिम (पुणा पाण्डुलिपि), पत्र पृत्त ३९
3. बहू, पत्र पृत्त ४४
4. बहू, पत्र पृत्त ४२
5. बहू,
जब मलया और महाबल का बहुत दिनों के बाद संयोग हुआ तो उन्हें अतिशय आनन्द हुआ। कवि कहता है कि प्रियजनों के मिलाप का आनन्द जिनेव्र के अतिरिक्त अन्य कोई नहीं जानता —

वल्लु जणेलागड जो सुह सिंहड्र होइ।
तिहि पमानु जिणवर कहइ अबर न जाणइ कोइ। ॥ ६५४ ॥

मलयसुंदरीचरियां की प्राकृत की तीन पाण्डुलिपियों का परिचय हमने जो पहले लेख में दिया था, उससे पूरा की यह प्रति प्रभाव है। बम्बई, आगरा, लीबर्डी, जेसलमेर और सूरत के ग्रंथमण्डारों में इस कथा की जिस प्राकृत पाण्डुलिपियों के होने का संकेत है, वे अभी प्राप्त नहीं की जा सकी हैं। उन्हें देखने पर ही ज्ञात होगा कि पूरा की प्रति से, उनका कोई सम्बन्ध है या नहीं। यदि पूरा की यह प्रति अकेली भी हो तो भी इसका कई दृष्टियों से महत्व है। मलयसुंदरीचरियां के सम्पादन के साथ इसे भी प्रकाश में लाने का प्रयत्न हम करेंगे।

विभागाध्यक्ष
जैनविद्या एवं प्राकृत विभाग
सुखाड़िया विश्वविद्यालय
उदयपुर (राज.)

1. मलयसुंदरीचरियां (पूरा पाण्डुलिपि) पत्र पृष्ठ ४४
2. जिनरतकोश, पृ ३०२ एवं ३०५ आदि।